REVISED SYLLABUS OF CBCS (HINDI)

B.A.(HONOURS) HINDI

CORE COURSE (CC)

1. हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)
2. हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)
3. आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता
4. आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)
5. छायावादोत्तर हिंदी कविता
6. भारतीय काव्यशास्त्र
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा
9. हिदी उपन्यास
10. हिंदी कहानी
11. हिंदी नाटक एवं एकांकी
12. हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं
13. हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता
14. प्रयोजनमूलक हिंदी

1. हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)

- आदिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियाँ
  सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य
  रासो काव्य, लौकिक साहित्य
- भक्तिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियाँ
  संत काव्य, सूफी काव्य, रामकाव्य, कृष्णकाव्य
- रीतिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियाँ
  रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्यधारा

2. हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

- आधुनिक काल : राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
  हिंदी नवजागरण
  भारतेन्दु युग
  द्विवेदी युग
  छायावाद
  प्रयोगवाद
  प्रगतिवाद
  नई कविता
  समकालीन कविता
- हिंदी गद्य का विकास :
  स्वतंत्रता पूर्व हिंदी गद्य
  स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य

3. आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

- विद्यापति
- कबीर
- जायसी
- सूरदास
- तुलसीदास
- रहीम
- मीराबाई
- बिहारी
- घनानंद
- रसखान

(इन कवियों की कविताओं में से विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता/अपेक्षा के अनुरूप चयन कर सकते हैं)

4. आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

- भारतेंदु
- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- मैथिलीशरण गुप्त
- रामनरेश त्रिपाठी
- जयशंकर प्रसाद
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- सुमित्रानंदन पंत
- महादेवी वर्मा

(इन कवियों की कविताओं में से विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता/अपेक्षा के अनुरूप चयन कर सकते हैं)

5. छायावादोत्तर हिंदी कविता

- केदारनाथ अग्रवाल
- नागार्जुन
- रामधारी सिंह 'दिनकर'
- माखनलाल चतुर्वेदी
- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- भवानीप्रसाद मिश्र
- रघुवीर सहाय
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
- गिरिजाकुमार माथुर

(इन कवियों की कविताओं में से विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता/अपेक्षा के अनुरूप चयन कर सकते हैं)

6. भारतीय काव्यशास्त्र

- काव्य लक्षण, काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन।
- रस सिद्धान्त – रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण।
- ध्वनि सिद्धान्त – ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि का वर्गीकरण।
- अलंकार सिद्धान्त – अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार सिद्धान्त एवं अन्य सम्प्रदाय।
- रीति सिद्धान्त – रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण।
- वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति का वर्गीकरण, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- औचित्य सिद्धान्त – औचित्य की अवधारणा।
- हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास – सामान्य परिचय।

7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- प्लेटो – काव्य संबंधी मान्यताएँ।
- अरस्तू – अनुकृति एवं विरेचन।
- लोंजाइनस – काव्य में उदात्त की अवधारणा।
- वड्र्सवर्थ – काव्य भाषा का सिद्धान्त।
- कॉलरिज – कल्पना और फैन्टेसी।
- क्रोचे – अभिव्यंजनावाद।
- टी.एस. एलियट – परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त।
- आई.ए. रिचडर्स – मूल्य सिद्धान्त, सम्प्रेषण सिद्धान्त।
- नई समीक्षा।
- मार्क्सवादी समीक्षा।
- शास्त्रीयतावाद, स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद, शैली विज्ञान।
- आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं औपनिवेशिकता, संरचनावाद।

8. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

- भाषा : परिभाषा, विशेषताएँ, भाषा परिवर्तन के कारण, भाषा और बोली।
- भाषा विज्ञान : परिभाषा, अंग, भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध।
- स्वनिम विज्ञान : परिभाषा, स्वन, वागीन्द्रियाँ, स्वनों का वर्गीकरण – स्थान और प्रयत्न के आधार पर। स्वन परिवर्तन के कारण।
- रूपिम विज्ञान – शब्द और रूप (पद), पद विभाग – नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात।
- वाक्य विज्ञान – वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्त्व, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण।
- अर्थ विज्ञान – शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ।
- अपभ्रंश, राजस्थानी, अवधी, ब्रज तथा खड़ी बोली की सामान्य विशेषताएँ।
- राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी।
- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास।

9. हिंदी उपन्यास

- गबन – प्रेमचंद
- त्यागपत्र – जैनेन्द्र कुमार
- मृगनयनी – वृंदावन लाल वर्मा
- मानस का हंस – अमृतलाल नागर
- महाभोज – मन्नू भंडारी

10. हिंदी कहानी

- उसने कहा था : चंद्रधर शर्मा गुलेरी
- पूस की रात : प्रेमचंद
- आकाशदीप : जयशंकर प्रसाद
- हार की जीत : सुदर्शन
- पाजेब : जैनेन्द्र कुमार
- तीसरी कसम : फणीश्वरनाथ 'रेणु'
- मिस पाल : मोहन राकेश
- परिन्दे : निर्मल वर्मा
- दोपहर का भोजन : अमरकांत
- सिक्का बदल गया : कृष्णा सोबती
- पिता : ज्ञानरंजन

11. हिंदी नाटक एवं एकांकी

नाटक

- अंधेर नगरी : भारतेंदु हरिश्चन्द्र
- स्कन्दगुप्त : जयशंकर प्रसाद
- आषाढ़ का एक दिन ': मोहन राकेश
- माधवी : भीष्म साहनी

एकांकी

- औरंगजेब की आखिरी रात : रामकुमार वर्मा
- विषकन्या : गोविन्द बल्लभ पंत
- और वह जा न सकी : विष्णु प्रभाकर
- भोर का तारा : जगदीशचंद्र माथुर

12. हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ

- सरदार पूर्ण सिंह– मजदूरी और प्रेम
- रामचन्द्र शुक्ल – करुणा
- हजारी प्रसाद द्विवेदी – देवदारु
- विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
- शिवपूजन सहाय – महाकवि जयशंकर प्रसाद
- रामवृक्ष बेनीपुरी – रजिया
- डॉ. नगेन्द्र – दादा स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
- माखनलाल चतुर्वेदी – तुम्हारी स्मृति
- विष्णुकांत शास्त्री – ये हैं प्रोफेसर शशांक

13. हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

- साहित्यिक पत्रकारिताः अर्थ, अवधारणा और महत्त्व।
- भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- प्रेमचंद और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका।
- महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाएँ :बनारस अखबार, भारत मित्र, हिन्दी प्रदीप, हिन्दोस्थान, आज, स्वेदश, प्रताप, कर्मवीर, विशाल भारत तथा जनसत्ता।

14. प्रयोजनमूलक हिंदी

- मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिंदी, सम्पर्क भाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी, बोलचाल की सामान्य हिंदी, मानक हिंदी और साहित्यिक हिंदी, संविधान में हिंदी।
- हिन्दी की शैलियाँ : हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी।
- हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास।
- हिन्दी का मानकीकरण।
- हिन्दी के प्रयोग क्षेत्र : भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना, वार्ता–प्रकार और शैली।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार : कार्यालयी हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, वैज्ञानिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, व्यावसायिक हिन्दी और उसके लक्षण, संचार माध्यम (आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र) की हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण।
- भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार, टिप्पणी तथा मसौदा–लेखन, सरकारी अथवा व्यावसायिक पत्र–लेखन।
- हिन्दी में पारिभाषिक शब्द निर्माण प्रक्रिया एवं प्रस्तुति।

B.A. (HONOURS) HINDI

ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSE (AECC)

1. हिंदी व्याकरण और संप्रेषण
2. हिंदी भाषा और संप्रेषण

1. हिंदी व्याकरण और सम्प्रेषण

- हिंदी व्याकरण एवं रचना - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय का परिचय। उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास। पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि, मुहावरे और लोकोक्तियां, पल्लवन एवं संक्षेपण
- **संप्रेषण की अवधारणा और महत्त्व**
- **संप्रेषण के प्रकार**
- **संप्रेषण के माध्यम**
- **संप्रेषण की तकनीक**
- **अध्ययन, वाचन एवं चर्चा: प्रक्रिया एवं बोध**
- **साक्षात्कार, भाषण कला एवं रचनात्मक लेखन**

2- हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

- भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप
- हिंदी भाषा की विशेषताएँ : क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विश्लेषण एवं अव्यय संबंधी।
- हिंदी की वर्ण–व्यवस्था : स्वर एंव व्यंजन।
- स्वर के प्रकार – ह्रस्व, दीर्घ तथा संयुक्त।
- व्यंजन के प्रकार – स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष तथा अघोष।
- वर्णों का उच्चारण स्थान : कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य तथा दन्तोष्ठ्य।
- बलाघात, संगम, अनुतान तथा संधि।
- भाषा संप्रेषण के चरण : श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन।

- हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य। वाक्य भेद। वाक्य का रूपान्तर।
- भावार्थ और व्याख्या, आशय लेखन, विविध प्रकार के पत्र लेखन।

B.A.(HONOURS) HINDI

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

1. विज्ञापन : अवधारणा, निर्माण एवं प्रयोग
2. हिंदी भाषा–शिक्षण
3. रचनात्मक लेखन
4. साहित्य और हिंदी सिनेमा
5. अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि
6. पाठालोचन
7. दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन
8. कोश विज्ञान एवं पारिभाषिक शब्दावली

(उपुर्यक्त में से कोई दो पाठ्यक्रम)

विज्ञापन: अवधारणा, निर्माण एवं प्रयोग

- विज्ञापन : अवधारणा, उद्देश्य एवं महत्त्व। विज्ञापन और उपभोक्ता व्यवहार, विचारधाराएँ, नैतिक प्रश्न और सामाजिक संदर्भ। विज्ञापनों का वर्गीकरण, प्रमुख अंग और सिद्धान्त।
- विज्ञापन और विपणन का संदर्भ, सामाजिक विपणन और विज्ञापन। विज्ञापन अभियान–योजना और कार्यान्वयन : स्थिति सम्बन्धी विश्लेषण, रणनीति, ब्रैंड इमेज। उपभोक्ता वर्गीकरण और विज्ञापन अभियान में माध्यम योजना (मीडिया प्लानिंग) की भूमिका।
- विज्ञापन और माध्यम भेद : मुद्रित, दृश्य, श्रव्य एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम। विज्ञापन एजेंसी का प्रबन्ध। हिन्दी विज्ञापनों से जुड़ी प्रमुख एजेन्सियों का परिचय। विज्ञापन : कानून और आचार संहिता।
- विज्ञापन सृजन : संप्रत्यय, सृजनात्मक लेखन, प्रारूप निष्पादन। अभिकल्पना (डिजाइन) के सिद्धान्त और अभिविन्यास (ले आउट)।
- विज्ञापन भाषा की विशिष्टताएँ। हिन्दी विज्ञापनों की भाषा का संरचनात्मक अध्ययन और शैली वैज्ञानिक विश्लेषण।

2. हिंदी भाषा शिक्षण

- भाषा शिक्षण के संदर्भ : राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षिक और भाषिक।
- भाषा शिक्षण की आधारभूत संकल्पनाएँ
  - प्रथम भाषा/मातृभाषा तथा अन्य भाषा की संकल्पना
  - अन्य भाषा के अंतर्गत द्वितीय तथा विदेशी भाषा की संकल्पना
  - मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के शिक्षण में अंतर
  - सामान्य और विशिष्ट प्रयोजन के लिए भाषा–शिक्षण
- भाषा शिक्षण की विधियाँ
  - भाषा कौशल – श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन।
  - भाषा का कौशल के रूप में शिक्षण; भाषा कौशलों के विकास की तकनीक और अभ्यास
  - अन्य भाषा–शिक्षण की प्रमुख विधियाँ : व्याकरण–अनुवाद–विधि, प्रत्यक्ष विधि, मौखिक वार्तालाप विधि, संरचनात्मक विधि, द्विभाषिक शिक्षण विधि।
- हिंदी शिक्षण
  - हिंदी का मातृभाषा के रूप में शिक्षण : स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, तकनीकी तथा विशिष्ट प्रयोजन संदर्भित शिक्षा।
  - द्वितीय भाषा के रूप में सजातीय और विजातीय भाषा वर्गों के संदर्भ में हिंदी शिक्षण
  - विदेशी भाषा के रूप में विदेशों में हिंदी शिक्षण
- भाषा परीक्षण और मूल्यांकन
  - भाषा परीक्षण और मूल्यांकन की संकल्पना
  - भाषा–परीक्षण के प्रकार
  - मूल्यांकन के प्रकार

3. रचनात्मक लेखन

- रचनात्मक लेखन : स्वरूप एवं सिद्धांत

  भाव एवं विचार की रचना में रूपांतरण की प्रक्रिया

  विविध अभिव्यक्ति–क्षेत्र : साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञापन, विविध गद्य अभिव्यक्तियाँ

  जनभाषा और लोकप्रिय संस्कृति

  लेखन के विविध रूप : मौखिक–लिखित, गद्य–पद्य, कथात्मक–कथेतर, नाट्य–पाठ्य

- **रचनात्मक लेखन : भाषा–संदर्भ**

  अर्थ निर्मिति के आधार : शब्दार्थ–मीमांसा, शब्द के प्राक्–प्रयोग, नव्य–प्रयोग

  भाषिक संदर्भ : क्षेत्रीय, वर्ग–सापेक्ष, समूह–सापेक्ष

- **रचनात्मक लेखन : रचना–कौशल–विश्लेषण**

  रचना–सौष्ठव : शब्द–शक्ति, प्रतीक, बिंब, अलंकरण और वक्रताएं

- विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यावहारिक अध्ययन

  क. कविता : संवेदना, काव्यरूप, भाषा–सौष्ठव, छंद, लय, गति और तुक

  ख. कथासाहित्य : वस्तु, पात्र, परिवेश एवं विमर्श

  ग. नाट्यसाहित्य : वस्तु, पात्र, परिवेश एवं रंगकर्म

  घ. विविध गद्य–विधाएँ : निबंध, संस्मरण, व्यंग्य

  ड. बाल साहित्य की आधारभूत संरचना

- सूचना–तंत्र के लिए लेखन

  प्रिंट माध्यम : फीचर–लेखन, यात्रा–वृत्तांत, साक्षात्कार, पुस्तक–समीक्षा

  इलेक्ट्रॉनिक माध्यम : रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म पटकथा लेखन, टेलीविजन पटकथा लेखन

4. साहित्य और हिन्दी सिनेमा

- सिनेमा और समाज : विश्व में सिनेमा का उदय, मध्यवर्ग, आधुनिकता और सिनेमा, मनोरंजन माध्यमों का जनतंत्रीकरण और सिनेमा, सिनेमा और समाज, सिनेमा की सामाजिक भूमिका, सिनेमा : कला या मनोरंजन, मनोरंजन माध्यमों की राजनीति, साहित्य और सिनेमा, प्रमुख सिने सिद्धान्त।
- सिनेमा का तकनीकी पक्ष : फिल्म निर्माण की प्रक्रिया, सिनेमा : सृजन की सामूहिकता, सिनेमा की भाषा, निर्देशन, पटकथा, छायांकन, सिने संगीत, अभिनय और संपादन, सेंसर बोर्ड, सिनेमा का वितरण और व्यवसाय, सिनेमाघर।
- हिन्दी सिनेमा का संक्षिप्त इतिहास : प्रारंभिक दौर का सिनेमा, स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी सिनेमा, भारतीय मध्यवर्ग और हिन्दी सिनेमा, भारतीय लोकतंत्र और हिंदी सिनेमा, सिनेमा में भारतीय समाज का यथार्थ, सिनेमाई यथार्थवाद और समानान्तर सिनेमा, भूमंडलीकरण बाजारवाद और हिन्दी सिनेमा, बाल फिल्में, तकनीकी क्रांति और हिन्दी सिनेमा।
- साहित्य और सिनेमा : अंतस्संबंध, सिनेमा और उपन्यास, संवेदना का रूपान्तरण और तकनीक।
- फिल्म समीक्षा :

आरंभ से 1947	:	राजा हरिश्चंद्र, अछूत कन्या, अनमोल घड़ी, देवदास
1947 से 1970	:	मदर इंडिया, दो आँखें बारह हाथ, तीसरी कसम, नया दौर
1970 से 1990	:	गर्म हवा, बॉबी, शोले, आँधी।
1990 से अद्यतन	:	तारे ज़मीं पर, थ्री इडियट्स, दिलवाले दुलहनिया ले जाएँगे, मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस., पान सिंह तोमर, मैरी कॉम।

5. अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि

- अनुवाद का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति। अनुवाद कार्य की आवश्यकता एवं महत्त्व। बहुभाषी समाज में परिवर्तन तथा बौद्धिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान में अनुवाद कार्य की भूमिका।
- अनुवाद के प्रकार : शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद एवं सारानुवाद। अनुवाद–प्रक्रिया के तीन चरण – विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन। अनुवाद की भूमिका के तीन पक्ष – पाठक की भूमिका (अर्थग्रहण की) द्विभाषिक की भूमिका (अर्थातंरण की प्रक्रिया) एवं रचयिता की भूमिका (अर्थसम्प्रेषण की प्रक्रिया)
- सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की अपेक्षाएं। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में अन्तर। गद्यानुवाद एवं काव्यानुवाद में संरचनात्मक भेद। किन्हीं दो अनूदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।
  - क. 'गीतांजलि' का हिन्दी अनुवाद – हंस कुमार तिवारी
  - ख. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा हिन्दी में किया गया भावानुवाद 'विश्वप्रपंच की भूमिका'।
- कार्यालयी अनुवाद : राजभाषा नीति की अनुपालना में धारा 3(3) के अन्तर्गत निर्धारित दस्तावेज का अनुवाद। शासकीय पत्र/अर्धशासकीय पत्र/परिपत्र (सर्कुलर)/ज्ञापन (प्रजेंटेशन)/कार्यालय आदेश / अधिसूचना/संकल्प–प्रस्ताव (रेज्योलूशन)/ निविदा–संविदा/ विज्ञापन।
- पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धान्त, कार्यालय, प्रशासन विधि, मानविकी बैंक एवं रेलवे में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली तथा प्रमुख वाक्यांश के अंग्रेजी तथा हिन्दी रूप।

6. पाठालोचन

- 'पाठ' की अवधारणा : वस्तुनिष्ठता, स्वायत्तता, संरचना, विन्यास, साभिप्राय शब्दावली और अग्रप्रस्तुति का संदर्भ।
  'पठन' की पद्धति – 'पाठ' की प्राचीन भारतीय पद्धतियाँ, प्रथम पाठ का प्रकार्य : अर्थबोध; द्वितीय पाठ का प्रकार्यः सौन्दर्य बोध। 'पाठक' के प्रकार – साहित्यिक पाठक : त्वरा और आवेग; गैर–साहित्यिक पाठक : साहित्येतर संदर्भों की खोज।
- पाठानुसंधान की समस्याएँः ग्रंथानुसंधान तथा आधार सामग्री की खोज : संस्थागत सम्पर्क, व्यक्तिगत, सम्पर्क, पाण्डुलिपियों का वंशवृक्ष निर्माण, पाठ का तिथि–निर्धारण, पाठांतर का अध्ययन, प्रक्षिप्त पाठ की पहचान।
- पाठनिर्धारण और लिपिविज्ञान, पाठनिर्धारण और छंद योजना, पाठानुसंधान में प्रयुक्त प्रमाणावली, लिप्यंतरण की समस्याएँ, पाठ–सम्पादन, हिन्दी पाठानुसंधान के मानक ग्रंथ।
- पाठालोचन की पद्धतियाँ – पाठ का शैली वैज्ञानिक, संरचनावादी, प्रकार्यमूलक, व्याकरणिक, रूपवैज्ञानिक और सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन।

7. दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन

- माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में भाषा–प्रयोग : लेखन, सम्पादन और प्रसारण का संदर्भ। रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा एवं वीडियो का व्याकरण एवं भाषिक वैशिष्ट्य।
  भाषा–प्रयोग : परिचय, संगीत, संलाप एवं एकालाप, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कथन, सहप्रयोग। श्रव्य–माध्यम और भाषा की प्रकृति, तान–अनुतान की समस्या, ध्वनि प्रभाव और निःशब्दता, मानक उच्चारण, समाचार पठन, भाषा का वैयक्तिकरण।
- दृश्य–श्रव्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, आंगिक और वाचिक अभिव्यक्ति, दृश्य भाषा, दृश्य और श्रव्य सामग्री का सामंजस्य तथा भाषिक संयोजन, सिनेमाई भाषा और संवाद की अदायगी।
- रेडियो–लेखन : रेडियो पत्रिका, फीचर, वार्ता, साक्षात्कार और परिचर्चा, समाचार लेखन, रेडियो नाटक और रूपक के लिए संवाद लेखन, रेडियो विज्ञापन। एफ.एम. बैण्ड पर प्रसारणार्थ शैक्षिक–सामग्री का सृजन।
- टेलीविजन–लेखन : समाचार, धारावाहिक, चर्चा–परिचर्चा, साक्षात्कार और सीधे प्रसारण की भाषिक संरचना और प्रस्तुति।
- सिनेमा : 'सुजाता', 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी फिल्मों के बहाने हिन्दी सिनेमा की संवेदना और भाषा पर विचार। फिल्म–समीक्षा लेखन।

8. कोश विज्ञान एवं पारिभाषिक शब्दावली

- कोश : परिभाषा, स्वरूप, महत्व। कोश और व्याकरण। कोश के भेद। कोश–निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति, अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उपप्रविष्टियाँ, संक्षिप्तियाँ, संदर्भ और प्रतिसंदर्भ।
- प्रविष्टि संरचना
- रूप–अर्थ संबंध, अनेकार्थकता, समानार्थकता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता। कोश निर्माण की समस्याएँ।
- हिंदी कोश साहित्य का संक्षिप्त इतिहास। कम्प्यूटर और कोश निर्माण।
- वैज्ञानिक और तनकनीकी हिंदी : प्रमुख अभिलक्षण और आधारभूत शब्दावली।
- पारिभाषिक शब्दावली : संकल्पना, स्वरूप और विशेषताएँ। पारिभाषिक शब्दावली निर्माणः इतिहास, प्रमुख दिशाएँ, मार्गदर्शी सिद्धान्त, समस्याएँ।

B.A. (HONOURS) HINDI

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSEC)

1. लोक साहित्य
2. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य
3. प्रवासी साहित्य
4. राष्ट्रीय काव्यधारा
5. छायावाद
6. हिंदी संत काव्य
7. तुलसीदास
8. प्रेमचंद

(उपर्युक्त में से कोई चार पाठ्यक्रम)

1. लोक साहित्य

- लोक और लोकवार्ता, लोक संस्कृति की अवधारणा, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक संस्कृति और साहित्य, साहित्य और लोक का अंतःसंबंध, लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध, लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।
- भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण। लोक गीत : संस्कारगीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत, जातिगीत।
- लोकनाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, विदेशिया, भांड, तमाशा, नौटंकी। हिन्दी लोकनाट्य की परम्परा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोकनाट्यों का प्रभाव।
- लोककथा : व्रतकथा, परीकथा, नाग–कथा, कथारूढ़ियाँ और अंधविश्वास।
- लोकभाषा : लोक संभाषित मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ।
- लोकनृत्य एवं लोकसंगीत।

2. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

- विमर्शों की सैद्धांतिकी :
  (क) दलित विमर्श : अवधारणा और आंदोलन, फुले और अम्बेडकर
  (ख) स्त्री विमर्श : अवधारणा और मुक्ति आंदोलन (पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ)
  (ग) आदिवासी विमर्श : अवधारणा और आंदोलन

- विमर्शमूलक कथा साहित्य :
  1. ओमप्रकाश वाल्मीकि – सलाम
  2. जयप्रकाश कर्दम – नौ बार,
  3. हरिराम मीणा – धूणी तपे तीर, पृष्ठ संख्या : 158–167
  4. मोहनदास नैमिशराय : मुक्तिपर्व (उपन्यास) का अंश (पृष्ठ 24 से 33)
  5. सुमित्रा कुमारी सिन्हा – व्यक्तित्व की भूख
  6. नासिरा शर्मा – खुदा की वापसी
- विमर्शमूलक कविता :
  (क) दलित कविता : अछूतानंद (दलित कहाँ तक पड़े रहेंगे), नगीना सिंह (कितनी व्यथा), कालीचरण सनेही (दलित विमर्श), माता प्रसाद (सोनवा का पिंजरा)
  (ख) स्त्री कविता : 1. कीर्ति चौधरी : सीमा रेखा, 2. कात्यायनी : सात भाइयों के बीच चम्पा, 3. सविता सिंह : मैं किसकी औरत हूँ
- विमर्शमूलक अन्य गद्य विधाएँ :
  1. प्रभा खेतान : अन्या से अनन्या, पृष्ठ 28–42 तक
  2. तुलसीराम : मुर्दहिया (चौधरी चाचा से प्रारंभ, पृष्ठ संख्या 125 से 135)
  3. महादेवी वर्मा : स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न
  4. डॉ. धर्मवीर : अभिशप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर

3. प्रवासी साहित्य

उपन्यास

- अभिमन्यु अनत – लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- सुषम बेदी – लौटना, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली
- नीना पॉल – कुछ गांव गांव कुछ शहर शहर, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- दिव्य माथुर – शाम भर बातें, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

कहानियाँ

- तेजेन्द्र शर्मा – कोख का किराया
- जकिया जुबेरी – सांकल
- जय वर्मा – गुलमोहर
- सुधा ओम ढींगरा – कौन सी जमीन अपनी
- उषा राजे सक्सेना – ऑन्टोप्रेन्योर
- पूर्णिमा बर्मन – यों ही चलते हुए
- अनिल प्रभा कुमार – बेमौसम की बर्फ

4. राष्ट्रीय काव्यधारा

- मैथिलीशरण गुप्त
- माखनलाल चतुर्वेदी
- सोहनलाल द्विवेदी
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
- रामधारी सिंह 'दिनकर'

(उपर्युक्त कवियों की चयनित रचनाएँ विश्वविद्यालय अपनी अपेक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम में रख सकते हैं।)

5. छायावाद

- जयशंकर प्रसाद
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- सुमित्रानंदन पंत
- महादेवी वर्मा

(उपर्युक्त कवियों की चयनित रचनाएँ विश्वविद्यालय अपनी अपेक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम में रख सकते हैं।)

6. हिंदी संत काव्य

- नामदेव
- कबीरदास
- रैदास
- जंभनाथ
- दादूदयाल
- सुन्दरदास (छोटे)
- पल्टूदास
- गुलाल साहब

(विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता एवं अपेक्षा के अनुरूप इन कवियों की रचनाएँ चयनित कर सकते हैं।)

7. तुलसीदास

- रामचरित मानस : अयोध्याकाण्ड (दोहा संख्या 67 से 185 तक) गीताप्रेस, गोरखपुर
- कवितावली (उत्तर काण्ड 30 छंद, पद संख्या 29, 35, 37, 44, 45, 60, 67, 73, 74, 84, 88, 89, 102, 103, 108, 119, 122, 126, 132, 134, 136, 140, 141, 146, 153, 155, 161, 165, 182, 229) गीताप्रेस, गोरखपुर।
- गीतावली (बालकाण्ड, 20 पद, पद संख्या 7, 8, 9, 10, 18, 24, 26, 31, 33, 36, 44, 73, 95, 97, 101, 104, 105, 106, 107, 110) गीताप्रेस, गोरखपुर
- विनय पत्रिका – (40 पद, पद संख्या 1, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 78, 79, 85, 89, 90, 94, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 159, 160, 164, 165, 166, 167, 182, 201, 269, 272) गीताप्रेस, गोरखपुर

8. प्रेमचंद

- उपन्यास – सेवासदन
- नाटक – कर्बला
- निबंध – साहित्य का उद्देश्य
- कहानियाँ – पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, ईदगाह, दो बैलों की कथा।

B.A. (HONOURS) HINDI

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

1. कला और साहित्य
2. संगीत एवं साहित्य
3. पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन एवं हिन्दी साहित्य
4. आधुनिक भारतीय कविता
5. आधुनिक भारतीय साहित्य
6. संपादन प्रक्रिया और साज सज्जा
7. सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र
8. हिन्दी की सांस्कृतिक पत्रकारिता

(उपर्युक्त में से कोई चार पाठ्यक्रम)

1. कला और साहित्य

- कला और साहित्य का अंतस्संबंध
- कला और समाज का अंतस्संबंध
- कला में दीर्घजीविता के तत्व और उपकरण
- भारतीय कला का विकास
- भारतीय कला का सौंदर्यशास्त्रीय महत्व
- कला और हिन्दी साहित्य के सम्बंध की परपंरा
- लोक–कला और साहित्य
- साहित्य के मूल्यांकन में कला का महत्व
- भारतीय नाट्य कला

2. संगीत एवं साहित्य

- साहित्य और संगीत के अंतस्संबंध
- वैदिक संगीतः सामान्य परिचय
- हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत : सामान्य परिचय
- आचार्य भरत और संगीत
- राग और रागनियाँ तथा उनका गायन समय
- मध्यकालीन वाद्य यंत्र
- सूफी साहित्य और संगीत
- संत साहित्य का संगीतात्मक ग्रंथन विधान
- गुरु ग्रंथ साहिब और संगीत परंपरा
- वैष्णव साहित्य और संगीत
- प्रसाद और निराला के काव्य में संगीतात्मकता

3. पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन एवं हिन्दी साहित्य

- अभिव्यंजनावाद
- स्वच्छंदतावाद
- अस्तित्त्ववाद
- मनोविश्लेषणवाद
- मार्क्सवाद
- आधुनिकतावाद
- संरचनावाद
- कल्पना, बिंब, फैंटेसी
- मिथक एवं प्रतीक

4. आधुनिक भारतीय कविता

असमिया

- नवकान्त बरुआ
- नीलमणि फूकन

उर्दू

- गालिब
- फ़िराक़ गोरखपुरी

तमिल

- सुब्रमण्यम भारती
- वैरमुत्तु

बांग्ला

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- काज़ी नज़रुल इस्लाम

संस्कृत

- श्रीधर भास्कर वर्णेकर
- राधावल्लभ त्रिपाठी

गुजराती

- उमाशंकर जोशी
- संस्कृति रानी देसाई

कश्मीरी

- रहमान राही
- चंद्रकांता

विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता एवं अपेक्षा के अनुसार इनकी कविताओं का चयन कर सकते हैं।

5. आधुनिक भारतीय साहित्य

- स्वाधीनता संग्राम और भारतीय नवजागरण तथा उसका भारतीय साहित्य पर प्रभाव
- भारतीय साहित्य और राष्ट्रीयता
- महात्मा गांधी और महर्षि अरविंद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव
- मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव
- पाठ्यपुस्तकें (उपन्यास) –
  आनंद मठ – बंकिम चंद्र
  मृत्युंजय – शिवाजी सावंत
  आवरण – भैरप्पा
- सुब्रमण्यम भारती की कविताएँ
  विश्वविद्यालय अपनी अपेक्षानुसार चयनित कर सकते हैं।

6. संपादन प्रक्रिया और साज–सज्जा

- सम्पादन : अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत तत्त्व, निष्पक्षता और सामाजिक संदर्भ, समाचार विश्लेषण, सम्पादन–कला के सामान्य सिद्धान्त।
- सम्पादक और उपसम्पादक : योग्यता, दायित्व और महत्त्व।
- समाचार मूल्य, लीड, आमुख, शीर्षक–लेखन आदि प्रत्येक दृष्टि से चयनित सामग्री का मूल्यांकन और सम्पादन। सम्पादन चिह्न और वर्तनी पुस्तिका। प्रिंट मीडिया की प्रयोजनपरक शब्दावली।
- सम्पादकीय लेखन : प्रमुख तत्त्व एवं प्रविधि। सम्पादकीय का समाजिक प्रभाव।
- समाचार पत्र और पत्रिका के विविध स्तम्भों की योजना और उनका सम्पादन। साहित्य और कला जगत की सामग्री के सम्पादन की विशेषताएँ। छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि का सम्पादन।
- हिन्दी के राष्ट्रीय और प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव और वर्तनी की समस्याएँ।
- साज–सज्जा और तैयारी : ग्राफिक्स और आकल्पन के मूलभूत सिद्धान्त। मुद्रण के तरीके, दैनिक समाचार पत्र का पृष्ठ–निर्माण (डमी), पत्रिका की साजसज्जा, रंग–संयोजन।

7. सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र

- रिपोर्ताज़ : अर्थ, स्वरूप, रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप, रिपोर्ताज और फीचर लेखन–प्रविधि।
- फीचर लेखन : विषय–चयन, सामग्री–निर्धारण, लेखन–प्रविधि। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, पर्यावरण, खेलकूद से सम्बद्ध विषयों पर फीचर लेखन।
- साक्षात्कार (इण्टरव्यू/भेंटवार्ता) : उद्देश्य, प्रकार, साक्षात्कार–प्रविधि, महत्त्व।
- स्तंभ लेखन : समाचार पत्र के विविध स्तंभ, स्तंभ लेखन की विशेषताएँ, समाचार पत्र और सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन। सप्ताहांत अतिरिक्त सामग्री और परिशिष्ट।
- दृश्य–सामग्री (छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि) से सम्बन्धित लेखन।
- बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा।
- आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकास पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता।

8. हिन्दी की सांस्कृतिक पत्रकारिता

- सांस्कृतिक पत्रकारिता : अवधारणा, अर्थ और महत्व। परम्परागत, आधुनिक और उत्तर आधुनिक समाज। संस्कृति, लोकसंस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति, अपसंस्कृति। बाजार, संस्कृति और संचार माध्यम।
- सांस्कृतिक संवाद : अर्थ, भेद और विशेषताएँ। सांस्कृतिक संवाददाता की योग्यताएँ : आस्वादन, अन्वीक्षण, कल्पनाशीलता आदि। सांस्कृतिक संवाद के क्षेत्रों का परिचय – मंचकला, पर्यटन, पुरातत्व संग्रहालय आदि।
- मंचकला और पत्रकारिता : रंगमंच; संगीत–गायन, वादन (ताल वाद्य, तंत्र वाद्य) और नृत्य के कार्यक्रम संवाद लेखन और समीक्षा। चित्रकला (पेंटिंग, ग्राफिक, टेक्सटाल डिजाइन), शिल्पकला, स्थापत्य कला के कार्यक्रम : संवाद लेखन और समीक्षा।
- पर्यटन पत्रकारिता – प्रमुख धर्मिक स्थलों, स्मारकीय और प्राकृतिक सम्पदाओं का परिचय : संवाद लेखन और समीक्षा। छायाचित्र (फोटाग्राफी) और चित्र पत्रकारिताः जनसंचार माध्यम के रूप में छायाचित्र, छायाचित्र लेने की तरीके, उपकरण और प्रयोग की विधि।
- चित्र पत्रकारिता : सिद्धान्त और व्यवहार, चित्र सम्पादन, सचित्र रूपक (फीचर), प्रदर्शनी।
- चलचित्र (छायाछवि/फिल्म) पत्रकारिताः संचार माध्यम के रूप में फिल्म और विडियो, लघुफिल्म, वृत्तचित्र, धारावाहिक : परिचय और विकास; फिल्म पृष्ठ का आकल्पन और अभिविन्यास।